



What is Arya Samaj?

Arya Samaj is an institution founded by Maharishi Dayanand Saraswati based on the universal teachings of the Vedas. It is an organisation propagating universal message of the Vedas for the benefit of the entire humanity.

ARYAN VOICE

YEAR 38

4/2016-17

MONTHLY

April 2016

SAVE THE DATE

**Vedic Vivah Mela (Matrimonial get together)
Saturday 18th June 2016**

**Dates for your diary
(Festivals celebrated at Arya Samaj Bhavan)**

**Arya Samaj Foundation Day – Sunday 10th April 2016
11am – 1pm**

**Ram Navmi – Sunday 17th April 2016
11am-1pm**

**ARYA SAMAJ (Vedic Mission) WEST MIDLANDS
(Charity Registration No. 1156785)**

**188 INKERMAN STREET (OFF ERSKINE STREET), NECHELLS,
BIRMINGHAM B7 4SA**

Tel: 0121 359 7727

E-mail– enquiries@arya-samaj.org Website: www.arya-samaj.org

CONTENTS

10 Principles of Arya Samaj	3
Fearless Path	4
	by Krishan Chopra
Hall Hire Advert	6
देवयज्ञ (अग्निहोत्र / हवन) - विधि पर व्यावहारिक चिन्तन	
	आचार्य डॉ. उमेश यादव
	7
Matrimonial Advert	20
List of Festivals for year 2016	21
News (पारिवारिक समाचार)	22
Important	24

**For General and Matrimonial Enquiries
Please Ring
Miss Raji (Rajashree) Chauhan (Office Manager)
Monday: - 1pm-5pm
Tuesday to Friday between: - 2.30pm to 6.30pm,
Wednesday: - 11.00am to 1.00pm.
Bank Holidays – Closed - Tel. 0121 359 7727
E-mail- enquiries@arya-samaj.org**

10 Principles of Arya Samaj

- 1. God is the primary source of all true knowledge and all that is known by its means.(At the beginning of creation, nearly 2 Billion years ago, God gave the knowledge of 4 Vedas to four learned Rishis named Agni, Vayu, Aditya and Angira. Four Vedas called Rigved, Yajurved, Samved and Atharva Ved contain all true knowledge,spiritual and scientific, known to the world.)**
- 2. God is existent, intelligent and blissful. He is formless, omnipotent, just, merciful, unborn, infinite, invariable (unchangeable), having no beginning, matchless (unparalleled), the support of all, the master of all, omnipresent, omniscient, ever young (imperishable), immortal, fearless, eternal, holy and creator of universe. To him alone worship is due.**
- 3. Vedas are the scripture of all true knowledge. It is paramount duty of all Aryan to read them, teach and recite them to others.**
- 4. All human beings should always be ready to accept the truth and give up untruth.**
- 5. All our actions should be according to the principles of Dharma i.e. after differentiating right from wrong.**
- 6. The primary aim of Arya Samaj is to do good to the human beings of whole world i.e. to its physical, spiritual and social welfare.**
- 7. All human beings ought to be treated with love, justice and according to their merits as dictated by Dharma.**
- 8. We should all promote knowledge (Vidya) and dispel ignorance (Avidya).**
- 9. One should not be content with one's own welfare alone but should look for one's welfare in the welfare of all others.**
- 10. In matters which affect the well being of all people an individual should subordinate any personal rights that are in conflict with the wishes of the majority. In matters that affect him/her alone he/she is free to exercise his/her human rights.**

Fearless Path

**Pusema asa anuveda sarvah so asman abhayatamena
nesat I Svastida aghrnih sarvaviro aprayucchan pura
etu prajanan II**

Atharv Veda 7.9.2

Meaning in Text Order

Pusa = nourishing Lord

Ima = these

Ashah = regions

Anuveda = know

Sarvah = all

Sah = He

Asman = us

Abhayatamena = complete fearless path

Niset = take

Svastida = looking after our welfare

Aghrnih = illuminator

Sarvavirah = most heroic amongst all

Aprayucchan = always active

Purah = guide

Etu = be

Prajanan = knowing

Meaning

The nourishing Lord who knows all regions, guide us along the fearless paths. He is the illuminator and wishes for the welfare of all. He blesses us with heroic children. Let God be our guide.

Contemplation

Our aim is to reach our destination and to attain nourishment. We don't know which direction is right for us and which is not. The question is who will tell us?

If we have lost our path then who will guide us? Only the nourishing Lord, can become our guide because, He knows all the directions. He knows precisely at what time, we have to take which direction. He knows exactly which path is completely without fear. If we follow His instructions then He will take us on the fearless path.

He looks after our welfare. As the rays of light come from the sun from all directions so the Lord is surrounded by all type of illuminations. Our eyes are dazzled when we see the bright light of the sun and God is brighter than a thousands suns. He is brave in all fields and he can make us victorious in all fields. Those who come in His shelter, he makes them brave. He makes them victorious in all ways. Those who take His shelter are never defeated in any field or meet with any difficulties.

It is our desire that the nourishing Lord become our guide and leader. As soon as we march on to our aim, He becomes our leader and so that we don't lose sight of our aim we approach it directly.. We have made the nourishing Lord our guide and are pursuing our path so that we can reach our destination.

by Krishan Chopra

Arya Samaj (West Midlands) Hall Hire

Perfect venue for –

- **Engagements**
- **Religious Ceremonies**
- **Community events**
- **Family parties**
- **Meetings**

Venue information –

- **£300 for 6 hours (min.)**
 - **£50 Hourly**
- **Main Hall with Stage**
 - **Dining hall**
 - **Kitchen**
 - **Cleaning**
- **Small meeting room**
- **Vegetarian ONLY**
 - **NO Alcohol**
 - **Free parking**

**For more information call us on
0121 359 7727**

**Monday to Friday between: - 2pm to 6pm,
Except Wednesday: - 10.30am to 1.00pm Bank Holidays – Closed**

देवयज्ञ (अग्निहोत्र / हवन) - विधि पर व्यावहारिक चिन्तन

आचार्य डॉ. उमेश यादव

आधारावाज्याहुति- इसे आधारावाज्याहुति वा आधार-आज्याहुति वा अधारौ-आज्याहुति कहा जाता है । आधार=मक्खन तथा आज्या=घृत अर्थात् गाय के दूध से निकाले गये मक्खन को तपाकर उससे तैयार किया घृत आधाराज्य है और उसकी आहुति ही आधाराज्याहुति है । आधार को यज्ञ का सिर/मस्तिष्क कहा गया है । सिरस्थ मस्तिष्क में जो ज्ञान उत्पन्न होता है वह अग्नि व सोम रूप सत्य (व्यावहारिक नियम) व ऋत् (प्राकृतिक नियम) को पालने में अत्यन्त सहायक है । उत्तर में आग्नेय कोण जो सत्य व्यवहार व दक्षिण में सौम्य कोण जो ऋत् व्यवहार का द्योतक है । इस कारण “अग्नये स्वाहा” से उत्तर में व “सोमाय” स्वाहा से दक्षिण में घृताहुति पड़ती है । अग्निषोमात्मकं जगत्- यह संसार अग्नि और सोम का समिश्रण (मिला हुआ भाग) है । ब्रह्माण्ड और पिंड दोनों की एक ही दशा है । शरीर भी अग्नि और सोम का मिश्रण है । इसी प्रकार गृहस्थ भी पति-पत्नी क्रमशः अग्नि व सोम का प्रतीक है । एक गर्म तो दूसरी शीतल । दोनों मिलकर ही पारस्परिक सम्बन्ध को संतुलित रखते हैं । यज्ञ-वेदी में भी पुरुष वार्यी ओर बैठा है जो अग्नि प्रधान है तो उसके कल्याणार्थ अग्नये स्वाहा से वार्यी ओर और स्त्री दार्यी ओर बैठी है जो सोम का प्रतीक है तो उसके निमित्त सोमाय स्वाहा से दार्यी ओर आहुति दी जा रही है । क्या ही सुन्दर वैदिक विज्ञान व सिद्धान्त पुष्ट हो रहा है । मनुस्मृति का यह प्रमाण “ यज्ञकर्मविवाहेषु पत्नी तिष्ठेद्वक्षिणम्” उक्त भाव को सिद्ध कर रहा है । इसका अर्थ है-यज्ञीय कर्म व विवाह आदि संस्कारों में पत्नी दार्यी ओर बैठे । अग्नि व सोम का युगल संगतिकरण

की एक चिन्तनात्मक सूची निम्न लिखित प्रस्तुत है । इससे अग्नि व सोम का विस्तार सम्बन्ध आप समझ सकते हैं ।

अग्नि	सोम
पुरुष	स्त्री
सूर्य	चन्द्रमा
यज्ञाग्नि	यज्ञीय जल
तैजस	अप्-तत्त्व
वाणी	मन
प्राण	रयि
प्राण	अपान
दिन	रात
जीवात्मा	देह

इस प्रकार यह पूरा सँसार ही अग्निषोमात्मक मान्य है । इन सबका समन्वय इन आहुतियों के साथ किया जाना उपयुक्त हो सकेगा ।

आज्यभागाहुति- ये भी घृत की ही दो आहुतियाँ कुण्ड के मध्य में प्रजापतये स्वाहा और इन्द्राय स्वाहा से दी जाती हैं । मध्य भाग केन्द्र का

प्रतीक है । प्रजापति=समस्त प्रजाओं का स्वामी परमात्मा और इन्द्र= इन्द्रियों को साथ रखनेवाला शरीरधारी जीवात्मार्ये । इन दो मध्यगत् आहुतियों के द्वारा प्रजापालक परमेश्वर से समस्त शरीरधारी जीवात्माओं के कल्याणार्थ प्रार्थना की गयी है । परमात्मा व जीवात्मार्ये दोनों ही सृष्टि

के मूलभूत केन्द्रीय कारण हैं । परमात्मा ने सब जीवात्माओं के हितार्थ ही सृष्टि के तीसरा कारण मूल प्रकृति की का विस्तार कर पूरी सृष्टि/कायनाथ बनायी । इन आहुतियों के माध्यम से हम विस्तार चिन्तन तक पहुँच सकते हैं और अध्यात्म की चरम सीमा तक जा सकते हैं । परमात्मा और जीवात्मा को ब्रह्मलोक का द्वारपाल कहा जाता है । प्रजापति को सूर्य तथा इन्द्र को वायु भी वेदों में कहा गया । शुद्ध प्रकाश व शुद्ध वायु की प्राप्ति हेतु भी इन आहुतियों का संगतिकरण सम्भावित है । ये सामान्य घृत आहुतियाँ दैनिक या वृहद यज्ञ की आधारभूमि हैं । आगे प्रथम दैनिक यज्ञ की दी जाने वाली १६ आहुतियों की चर्चा करेंगे । ४ आहुतियाँ घी की जो पूर्व कह आये हैं, ४ आहुतियाँ-प्रातः कालीन-सूर्योज्योतिर्ज्योतिः--इत्यादि, ४ आहुतियाँ प्रातः-सायं की उभयकालीन -भूरग्नये प्राणाय स्वाहा--इत्यादि और ४ आहुतियाँ अन्त की -आपोज्योतिरसो.. से अग्ने नय सुपथाराये... तक ये कुल मिलाकर दैनिक यज्ञ की १६ आहुतियाँ बनीं । इसी तरह सायं कालीन -अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा... इत्यादि की ४ आहुतियाँ और सारी वही मिलकर १६ आहुतियाँ सायं कालीन करने वाले यज्ञ की बनेंगी ।

प्रातः कालीन आहुति- यहाँ से घी के साथ तैयार की हुई सुगन्धित सामग्री की आहुतियाँ भी प्रारम्भ हो जाती है । अग्नि अब तक चारों ओर से पूर्ण प्रदीप्त हो कर सामग्री आदि साकल्य को अच्छी तरह भस्म करने के योग्य हो जाती है । प्रातः कालीन सूर्य-ज्योति को क्रमशः एक अनुपम ज्योति,

परमात्म ज्योति, ब्रह्मवर्चस ज्योति का प्रतीक है । विभिन्न अवस्थागत सूर्य की ज्योतियाँ हमारे जीवन के लिये अनेक रूपों में हितकारी, स्वास्थ्यप्रद, रोगों को दूर करने वाली मान्य हैं अत एव अखण्ड सूर्यरूप

परमात्मा से प्रार्थना की गयी है कि हे प्रभो, हमें भौतिक सूर्य की इन विभिन्न ज्योति/रश्मियों का भरपूर लाभ मिले । हम सद्ज्ञान पूर्वक इनका सही लाभ ले सकें ।

सायं कालीन आहुतियाँ- इसी प्रकार सायं कालीन अग्नि की विभिन्न अवस्थाओं का चिन्तन है । अग्नि ज्योतिरूप, अग्नि वर्चसरूप, अग्नि परमात्मरूप और अग्नि जीवात्मरूप आदि अर्थों व भावों में मान्य है । अग्नि भी विभिन्न रोगों को दूर करने वाला तत्त्व है । हम अग्नि के विभिन्न रूपों का सद् प्रयोग करना बुद्धिपूर्वक जानें और जीवन का हरसम्भव उत्थान करें ।

उभयकालीन (प्रातः-सायं की सम्मिलित) आहुतियाँ- मंत्रगत आये शब्दों पर विचार करने से इनका संगतिकरण आसानी से समझ आ सकता है । प्रथम आध्यात्मिक अर्थ-ईश्वर परक देखें-

१. भूः =सत्स्वरूप (सत्ताधारी), अग्नये=सब में आगे/अग्रणी मार्गदर्शक, प्राणाय= सबको प्राण अर्थात् जीवन दाता परमेश्वर के लिये समर्पण है ।
२. भुवः=चित्स्वरूप (चित्स्वरूप), वायवे= सब को जानने व धारण करने वाले सर्वशक्तिमान् परमात्मा व अपानाये= प्रिय आत्माओं के दुःखों को दूर करने वाले दयालु परमेश्वर के लिये समर्पण है ।
३. स्वः= आनन्दस्वरूप (आनन्दवाला), आदित्याय= अमर अजर

स्वप्रकाशस्वरूप, व्यानाय=सम्पूर्ण जगत् को क्रियाशील करने वाले जगदीश्वर के लिये समर्पण है ।

४. सच्चिदानन्दस्वरूप, मार्गदर्शक, बलशाली, स्वप्रकाशस्वरूप, प्राणदाता, दुःखविनाशक तथा सबको गतिदाता परमेश्वर के प्रति याज्ञिक आहुतिपूर्वक विनम्रभाव से समर्पित है ।

भौतिक अर्थ-चिन्तन-

१. भूमिस्थ अग्नि व प्राण के सद् प्रयोग हेतु समर्पण २. अन्तरिक्षस्थ वायु व अपान के समुचित लाभ हेतु समर्पण ३. द्यौलोकस्थ आदित्य (सूर्य) व व्यान के व्यावहारिक लाभ हेतु समर्पण ४. तीनों लोकों के उक्त सभी पदार्थों का जीवन के विकास में समुचित लाभ मिले, इसके लिये समर्पण दिखाया गया है । यह शरीर परक भी संगत है । शरीर में अग्नि, प्राणशक्ति, वायु, अपान, व्यान व प्रकाश आदि सब पदार्थों का समुचित व्यवहार है । शुद्ध वायु के प्रवेश से दूषित वायु (अपान) वाहर निकल जाता है जिससे शरीर स्वस्थ रहता है । सूर्य का प्रकाश हमें सदा व्यानरूप में क्रियाशील/ऊर्जावान् बनाये रखता है । इस प्रकार हम इन सब का विनियोग अपने जीवन को सुखमय करने में लगा सकते हैं ।

अंतिम के चार मंत्रों के भाव-

१. ओ३म् आपोज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवःस्वरों स्वाहा-यहाँ भी पूर्णतया ईश्वरार्पण-भाव है । इस मंत्र में आये सारे शब्द परमेश्वर वाची हैं- आपः=सर्वव्यापक, ज्योतिः=प्रकाशमान, रसः=भक्तों का प्रिय वाणी-रस, अमृत= अविनाशी, ब्रह्म=सबसे बड़ा/महान, भूः=सत्स्वरूप, भुवः=चित्स्वरूप,

स्वः=आनन्दस्वरूप, ओम्= सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति व प्रलय करने वाला

परमेश्वर । याज्ञिक पूर्णसमर्पण के साथ परमेश्वर का गुणगान कर रहा है । स्वाहा= स्व=अपनी, आहा= अभिव्यक्ति/वचन । अपनी अभिव्यक्ति है और परमेश्वर के साथ समर्पण है तो निश्चित ही यह याज्ञिक का सत्य वचन है । इस मंत्र का भौतिक अर्थ भी समझ सकते हैं । आपः=नदियाँ, ज्योतिः= सूर्य,अग्नि,विद्युत् आदि, रसः= औषधि, दुग्ध आदि पेय पदार्थ, अमृतम्=मुक्ति, घृत, प्राण, आयुष्य आदि, ब्रह्म= ज्ञान, वेद, प्राप्ति, भूः=भूमि, भुवः=अन्तरिक्ष, स्वः= द्युलोक, ओम्= पूर्वोक्त सब का नियामक व कर्त्ता परमात्मा, स्वाहा= सत्य भाव से स्तुति,प्रार्थना व उपासना । इस प्रकार तीनों लोकों के ये सब पदार्थों का हम जीवन के पोषण में सही लाभ ले सकें, इसके किये सृष्टि-कर्त्ता व सबका नियामक परमेश्वर से प्रार्थना की गयी है ।

2. यामेधां देवगणा पितरश्चोपासते । तया मां मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥-इसमें एक अच्छी बुद्धि /मेधा हेतु अग्नि=ज्ञानस्वरूप परमात्मा से प्रार्थना की गयी है । जिस मेधा=सूक्ष्म/तीव्र बुद्धि की उपासना/याचना हमारे पूर्व के आचार्य, विद्वान्, पितर=माता-पिता-दादा आदि व रक्षकों ने की है, उसी सूक्ष्म बुद्धि से हमें भी मेधावी/बुद्धिमान् बनावें, ऐसी प्रार्थना है । ऋषि-महर्षि, आचार्य आदि विद्वानों द्वारा प्राप्त बुद्धि निश्चित ही हमारे जीवन की बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान करने में अत्यन्त सहायक है ।

3. विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद्भद्रं तन्न आसुव ॥ इसमें सकल जगत् के सविता देव=उत्पत्तिकर्ता व सब दिव्य गुणों के भण्डार परमेश्वर से जीवन की सब बुराइयों को दूर करने तथा सब कल्याणकारी गुण, कर्म, स्वभाव व पदार्थ को प्राप्त कराने की प्रार्थना है ।

४. अग्नेनय सुपथा रायेऽअस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ॥ इस मंत्र में
सम्पूर्ण जगत् के ज्ञान-विज्ञान के स्वामी स्वप्रकाशस्वरूप सब दिव्य गुण-
कर्म-स्वभावों का भंडार परमेश्वर से प्रार्थना है कि वह हमें आवश्यक
धनैश्वर्यो की प्राप्ति हेतु सदा श्रेष्ठ पथ पर ले चले । हमारे सब पापरूप
कर्मों को नष्ट कर हमें स्वच्छ बनावे । हम सब सदैव श्रद्धानत हो उसकी
अत्यन्त प्रशंसा करते हुये उसी परमेश्वर के प्रति सादर समर्पित हों ।

पूर्णाहुति- पूर्णाहुति उपरोक्त १६ आहुतियों से पृथक् है । यह भी एक ही
मंत्र है- ओ३म् सर्व वै पूर्ण स्वाहा । पर इसी एक मंत्र को तीन वार पृथक्-
पृथक् बोलते हुये तीन आहुतियाँ दी जाती हैं । इससे निम्नलिखित तीन
भावनायें व्यक्त हो रही हैं-

१. निश्चित ही यज्ञ की सम्पूर्णता पर प्रथम सर्वव्यापक यज्ञस्वरूप
परमेश्वर के प्रति समर्पण की भावना अभिव्यक्त है ।
२. यज्ञ की पूर्ण समाप्ति पर परमेश्वर का हार्दिक धन्यवाद ।
३. यज्ञीय आत्मिक भावनाओं की तृप्ति पर विनम्रतापूर्वक प्रसन्नतायापन
व समर्पण ।

यज्ञ की समाप्ति पर हम देखते हैं कि यहाँ सब ओर से तृप्ति ही तृप्ति है
। मन, बुद्धि, इन्द्रियाँ, आत्मा सब आध्यात्मिक रस में डूबकर तृप्त हो
जाते हैं । वातावरण शुद्ध होकर मानो वह भी तृप्त हो रहा है । लोग भी

शुद्ध, निरोग, प्रसन्नतायुक्त वातावरण तथा परमपिता परमेश्वर की कृपा

पाकर आनन्द की अनुभूतियों के साथ तृप्त हो जाते हैं। सब मानों आध्यात्मिक, आधिभौतिक व आधिदैविक तीनों स्वाभाविक दुःखों से छूट जाते हैं। पूर्णाहुति की तीन आहुतियाँ इसके लिये भी संगत मान्य है कि सब उपरोक्त तीनों दुःखों से बचें। सच में यही है-विविधता में पूर्णता। जगहित में स्वहित।

यज्ञ की पूर्णता वैयक्तिक, सामाजिक, राष्ट्रीय व विश्वजनीन पूर्णता का प्रतीक है जिसका मूल आधार प्रत्येक की शारीरिक, मानसिक व आत्मिक उन्नति है जो इस पवित्र कर्म से हो रही है। निश्चित ही यहाँ महर्षि दयानन्द की अन्तर्भावना अक्षरशः पूर्ण हो रही है - “ प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिये किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये” - आर्य समाज का नौवाँ नियम-म. द.

यहाँ तक दैनिक यज्ञ की चार्चा थी अब बृहद् यज्ञाहुतियों का उल्लेख प्राप्त है।

बृहद् यज्ञाहुतियाँ- ये आहुतियाँ मूलतः १८ हैं -

व्याहृतियाँ-ओ३म् भूरग्नये स्वाहा.. आदि---	४
स्विष्टकृतहोमाहुति-यदस्यकर्मणो...	१
प्राजापत्य मौन घृताहुति-ओ३म् प्राजापतये स्वाहा..	१
पावमान्य-आज्याहुति-अग्न आयुषि पवस्व आ....आदि...	४
माँगलिक आज्याहुति-त्वं नोऽग्ने वरुणस्य विद्वान्... आदि..	८

कुल मिलाकर= १८

व्याहृतियाँ- भूः-अग्नि, भुवः-वायु, स्वः-आदित्य -इन तीनों युगल शब्दों पर

ध्यान दें । भूमि की अग्नि, अन्तरिक्ष का वायु और द्युलोक का आदिय (सूर्य, विद्युत् आदि) ये सब मानव जीवन वा अन्य प्राणियों के लिये भी जीवन यापन में सहायक हैं । यज्ञाहुतिओं से इन्हें शुद्ध कर हम इनका जीवन-यापन में समुचित लाभ लें । ये शब्द ईश्वर के लिये भी प्रयुक्त हैं अतः हम इन मंत्रों द्वारा परमेश्वर की स्तुति करके समर्पण भाव भी व्यक्त करते हैं ।

स्विष्टकृतहोमाहुति- इस में पक्वान्न भात/हलवा आदि या घृत की आहुति दी जाती है । स्विष्ट=सु+इष्ट अर्थात् जो चाहा, वह सु=सुन्दर हो; सत्य व शिव (कल्याणप्रद) हो । हमारी इच्छित भाग को जो श्रेष्ठ बना दे वह स्विष्टकृत है । पुरोहित और यजमान मिलकर अपने यज्ञ को अच्छा ही करने की कोशिश करते हैं तथापि मनुष्य स्वभाव से अल्पज्ञ है; कहीं न कहीं कुछ घट-बढ़ हो जाना सम्भव है । ऐसी स्थिति में इस मंत्र से याज्ञिक यज्ञदेव परमेश्वर से विनम्र प्रार्थना करता है कि इस कर्म में जो कुछ भी न्यूनाधिक भूल हो गयी है, इसके लिये वह प्रायश्चित्त करने को तैयार है और उसे भविष्य में पूरा करने की पवित्र भावना भी रखता है । अतः परमात्मा उसके वाँछित फलों में कमी न करे और भावी सुधार हेतु उसे उचित क्षमता प्रदान करे-ऐसी प्रार्थना की गयी है । यद्यपि फल कर्मानुसार ही निश्चित है तथापि ईश्वरीय सानिध्य व उससे प्रार्थना याज्ञिक को संतोष, मन की शांति, मनोबल व सदैव श्रेष्ठ कर्म को पूरा करने का साहस व उत्साह देती है । याज्ञिक कभी हताश व निराश नहीं हुआ करता ।

प्राजापत्याहुति- यह घृत की एक मौन आहुति है । चुकि यह आहुति प्रायश्चित्त भावयुक्त आहुति के बाद दी जाती है फलतः याज्ञिक प्रजापालक

यज्ञपति परमेश्वर की दिव्य गोद को पाकर भाव-विभोर होता हुआ वाणी-मुक्त हो जाता है; मौन हो जाता है, मानो प्रजापति परमेश्वर को उसने अपने मन में बैठा लिया हो। “मनो वै प्रजापति”- शतपथ ब्राह्मण में परमेश्वर से ओत-प्रोत भाव-विभोर मन को भी प्रजापति कहा। अब उसे जानने के लिए वाणी नहीं अपितु संकल्पित, सँस्कारित व नियंत्रित मन की आवश्यकता है। वैसे भी जैसा मन विचारेगा वैसा ही वाणी बोलेगी। प्रजापति वाणी से अवर्णनीय है पर सँस्कारित मन में ईश्वर का ध्यान टिक जाये तो उसको जानने व पाने में हर आत्मा सक्षम हो सकता है।

पावमान्याहुति- इन मंत्रों में “पावमानाय स्वाहा” की पुनरावृत्ति है। अतः ये आहुतियाँ “पावमान्याहुति” कहलाती हैं। प्रस्तुत चार आहुतियों के मंत्रों में जीवन-दर्शन है। पवित्र जीवन की प्रार्थना है। आयु १. में पवित्रता श्रेष्ठ कर्मों से ही सम्भव है। अर्थात् श्रेष्ठ कर्म से आयु सार्थक हो जाती है, यही उसकी पवित्रता है। सुवोर्जमिषम्= ऊर्जावान् होना, ईष (वुद्धि-विज्ञान) का स्वामी होना, आरे वाधस्व दुच्छुनाम् =दुष्प्रवृत्तियों से अलग रहना इत्यादि ही श्रेष्ठ मनुष्य का धरोहर है। शुद्ध समाज के निर्माण के निर्माण में उपरोक्त भाव सहायक हैं। २, अग्निरुप परमेश्वर अग्रणी है; हमारा नायक है, वह एक द्रष्टा है। वह पांचजन्य है अर्थात् पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण व नीचे इन पाँचों दिशाओं के प्राणियों का रक्षक है। ३. वही परमेश्वर सबका “महागयम्” अर्थात् महाप्राण सर्वशक्तिशाली है जो सब ओर से पवित्रताओं का स्वामी है। अतः इससे ही सुकर्म, वर्चस (बल), तेज, पराक्रम, धन आदि में पवित्रता व श्रेष्ठता भरने की प्रार्थना है। ४. प्रजापति परमेश्वर सबका स्वामी, सब कामनाओं का स्वामी व सब उत्पन्न हुये जगत् में सर्वोपरि है। उससे कोई अन्य बड़ा नहीं अथवा उसके बराबर

भी नहीं है । अतः मनुष्य जीवन की सफलता के लिये आवश्यक सब धनैश्वर्यों के स्वामी बनने की ईच्छा रखने वाला याज्ञिक यहाँ प्रार्थना कर रहा है कि वह परमात्मा उसकी सब वाँछित श्रेष्ठ कामनाओं की पूर्ति करे । प्रार्थी की विनम्रता, शुद्धता, समर्पण व श्रद्धा उसके अमूल्य धरोहर हैं जो उसे सदैव जीवन के मार्ग पर आगे बढ़ने में अत्यन्त सहायक हैं ।

माँगलिक/ अष्टाज्याहुतियाँ- ये ८ हैं । इनके विशेष भाव ईश्वरार्पण तो है ही, साथ ही यज्ञ के ब्रह्मा पुरोहित के प्रति श्रद्धा व आदर भाव देना भी है । इन मंत्रों में प्रयुक्त अग्नि शब्द यज्ञ का मार्गदर्शक पुरोहित व वरुण शब्द वरणीय परमेश्वर के लिये ग्राह्य है । पापों से छूटकारा दिलाने वाले यज्ञों की पूर्णता में विद्वान् पुरोहित का मार्गदर्शन तथा परमेश्वर की कृपा अत्यन्त महनीय है । क्रोध पर काबू, मन का नियन्त्रण व उसकी शुद्धि, द्वेष को दूर भगाना आदि श्रेष्ठ जीवन के लिये उत्तम है । उचित मार्ग दर्शन कर विद्वान् पुरोहित यजमान को परमेश्वर के कोप-भाजन से बचाता है अर्थात् यज्ञकर्त्ता पाप मार्ग से अलग रहता है जिसमें योग्य पुरोहित का महत्त्व है । यज्ञ-स्थल सब श्रेष्ठ संस्कारों की पवित्र भूमि है । उसका उपयोग करना हमारा धर्म है । विना यज्ञ सुखमार्ग नहीं खुलता । यज्ञकर्त्ता की आयु लम्बी व स्वस्थ होती है । यह हमारा सर्वोत्तम रक्षक है । “ये ते शतं ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा विततामहान्तः” इत्यादि मंत्रों द्वारा प्रभु से यही पुकार है कि जो हमारे यज्ञों के बड़े-बड़े सम्बन्ध (पाश=जाल) फैले हैं, उन्हें हम तोड़ सकें और उनकी सत्प्रेरणायें ग्रहण कर लें । यज्ञ, यज्ञीय सूत्र व स्रोत व यज्ञकर्त्ता ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आदि से हम दूर न हों वल्कि इनसे मजबूत सम्बन्ध बनाकर सब पाशों/बन्धनों पर काबू पावें । ऐसा करने से ही हम “वरुण-पाश” से बच सकते हैं । परमेश्वर का न्याय-

बन्धन ही वरुण-पाश है । पाप करके हम इस पाश में फँस जाते हैं अतः श्रेष्ठ कर्म यज्ञ को पूरा कर हम इस जकड़ से निकल सकते हैं । यह यज्ञ-कर्म हमें अपयश, बुराई, पाप-ताप, निन्दा आदि हर नाकारात्मक स्थिति से बचाता है । यही हमारा सुखाधार है; मुक्ति का द्वार है । इस कारण याज्ञिक कभी यज्ञ को टूटने न दे । इसकी रक्षा ही उसका परम कर्तव्य है । इन मंत्रों में उपरोक्त सारी भावनाओं को ही जगाने की प्रार्थना व ज्ञान प्राप्त है ।

यज्ञात्मक अग्निहोत्र परक कुछ महत्त्वपूर्ण वैदिक सूक्तियाँ प्रस्तुत हैं । इनसे अवश्य ही यज्ञ के प्रति विशेष प्रेरणा मिलेगी ।

१. स्वर्गकामो यजेत- स्वर्ग अर्थात् सुख चाहने वाला यज्ञ करे ।
२. वैश्वानर ज्योतिरिदार्याय-ऋ.१.३९.२- हे यज्ञाग्नि, तू आर्यों की ज्योति है ।
३. भद्रा शक्तिर्यजमानाय सुन्वते-ऋ.१.८३.३- यजमान को भद्र=कल्याणकारी शक्ति मिलती है ।
४. गृहं गृहमुपतिष्ठाते अग्निः-ऋ.१.१२४.११- यज्ञ की अग्नि घर-घर जाये ।
५. अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः-ऋ.१.१६४.३५- यह यज्ञ भुवन=विश्व का केन्द्र है ।
६. सहस्रभरः शुचिजिहवोऽग्निः-ऋ. २.९.१- पवित्र ज्वालापूर्ण होमाग्नि हजारों लाभ देती है ।
७. यज्ञो वितन्तसाय्यः-ऋ.८.६८.११- यज्ञ सब ओर सुख फैलाता है ।
८. नाब्रह्मा यज्ञऋधग् जोषति त्वे- ऋ.१०.१०५.८- विना ब्रह्मा (पुरोहित) का यज्ञ पृथक् होकर प्रभु को प्रिय नहीं होता ।
९. ऊर्ध्वोऽध्वर आस्थात् -यजु. २.८- यज्ञ का स्थान सबसे ऊपर होता है ।

१०.सुब्रह्मा यज्ञः सुशमी वसूनाम्-यजु. १५.३४- उत्कृष्ट ब्रह्मा (पुरोहित) युक्त यज्ञ ऐश्वर्यो का सुकर्त्ता होता है ।

११. नादक्षिणेन यज्ञेन यजेत-का.श.ब्राह्मण-३.१.८.२- विना दक्षिणा का यज्ञ न करें ।

१२.विच्छेत्स्यन्ते वा अदक्षिणा यज्ञाः-जै.ब्राह्मण-२.११६- विना दक्षिणा वाले यज्ञ विफल हो जायेंगे ।

१३. यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म-श.ब्राह्मण- १.७.१.५- यज्ञ ही श्रेष्ठतम कर्म है ।

१४. शतोन्मानो वै यज्ञः-श. ब्रा. यज्ञ सैकड़ों उत्थान देने वाला होता है ।

१५.मुखं वा एतद् यज्ञानां यदग्निहोत्रम्-श.ब्रा. १४.३.१.१९- अग्निहोत्र सब यज्ञों का मुख है ।



VEDIC VIVAH (MATRIMONIAL) SERVICE

The vedic vivah (matrimonial) service has been running for over 30 years at Arya Samaj (West Midland) with professional members from all over the UK.

Join today.....

Application form and information can be found on the website
www.arya-samaj.org

Or

Call us on

0121 359 7727

Monday to Friday between: - 2pm to 6pm,
Except Wednesday: - 10.30am to 1.00pm
Bank Holidays - Closed

List of Festivals for year 2016

Festival	Actual Date of Festival	Date for celebration in Arya Samaj
Republic Day of India	Tuesday 26th January	Sunday 31st January.
Rishi Bodh Utsav	Monday 7th March	Sunday 6th March
Holi	Thursday 24th March	Sunday 27th March.
Arya Samaj Foundation Day	Sunday 10th April	Sunday 10th April
Ram Navmi	Friday 15th April	Sunday 17th April.
Annual General Meeting	N/A	Sunday 31st July
Ved Katha (8 days)	N/A	From Thursday 18th August till Thursday 25th August
Raksha Bandhan	Thursday 18th August	Sunday 21st August
Independence Day of India	Monday 15th August	Sunday 21st August.
Shri Krishna Janmasthanmi	Thursday 25th August	Thursday 25th August
Special Satsang for University Students	N/A	Sunday 4th September
Gayatri Maha Yajna	N/A	Sunday 11th September
Dasahahara	Tuesday 11th October	Sunday 16th October
Diwali	Sunday 30th October	Saturday 29th October

News

Congratulations:

- Mr Alok Yadav, elder son of Acharya Umesh Chandra Yadav and Mrs Shanti Yadav, got married to Dr. Megha Jagga, daughter of Late Naresh and Mrs Nirmal Jagga, in Hisar, Haryana, India on 6th March 2016. Acharya ji held a reception party in his ancestral home at Teyap (Goh), Aurangabad, Bihar on 10th March 2016. About 2700 people including his teachers attended this function. They were all served meals and he facilitated his teachers with a shawl. Our hearty congratulations to the newly wed couple. We pray to God for a very happy, healthy and prosperous life together for the newly wed.

Donations to Arya Samaj West Midlands

- Radhika Mangia £51
- Asha Verma £10
- Mr R Khosla £21

Thank you for all your Donations

**Please contact Acharya Dr Umeh Yadav on
0121 359 7727
for more information on**

- **Member or non member wishing to be a Yajman in the Sunday congregation to celebrate an occasion or to remember a departed dear one.**
- **Have Havan, sankars, naming, munden, weddings and Ved Path etc performed at home.**
- **Our premises are licensed for the civil marriage ceremony.**
- **Please join in the Social group at Arya Samaj West Midlands every Wednesday from 11am. Emphasis is on keeping healthy and fit with yoga and Pranayam. Hot vegetarian Lunch is provided at 1pm.**
- **Ved Prachar by our learned Priest Dr Umesh Yadav on Radio XL 7 to 8 am, first Sunday of the month. Next 3rd April 2016 & 1st May 2016**

Every effort has been taken that information given is correct and complete. But if any mistake is spotted please inform the office.

0121 359 7727

E-mail- enquiries@arya-samaj.org
Website: www.arya-samaj.org

IMPORTANT

Notices to Arya Samaj West Midlands Members

- **Reminder to our Life members from Dr. Narendra Kumar (Chairman). In July 2014 we requested our life members to donate £15 or £10 per year to help us with the cost of publishing, printing and posting our monthly bulletin "Aryan Voice". I am happy to say that vast majority of members have donated money to help us with this cost. It is a very polite request to our life member please continue with this donation. Those of you who have not donated any money till now please do so.**
- **Dear Ordinary members of ASWM. This is a polite request to pay your annual fee of £20 membership when you receive a reminder letter from Arya Samaj Office. This money helps us to send you Aryan Voice each month. The letter will come out to members on the month they joined. From January 2016 we will have to sadly cancel the membership of those who have not paid the fee.**
- **Dear members, we are updating our email database for the membership of Arya Samaj West Midlands. We do not have email addresses of a large number of our members. In this time and age it is important to have this information. So if you have an email address please inform our office by emailing your address to enquiries@arya-samaj.org. Your cooperation will be highly appreciated.**